## शेर और बकरी के बीच

यह समय कुछ ऐसा है
मैं सिर्फ दो तरह की कविता लिख सकता हूँ
जैसे सिक्का हवा में उछले
शेर आयेगा या फिर बकरी
तीसरी चौथी पांचवी या छठी
कोई सम्भावना नहीं.
शेर आया तो उपसंहार
बकरी आई तो चूल्हा जला
बड़े दिनों के बाद
स्वाद को जिह्वा पर जगह मिली
मौत और चटख भूख के बीच
सिर्फ अनंत खालीपन है.
आरम्भ से पहले अंत तय है
रंगों की पिटारी में दो ही रंग हैं
सफेद या स्याह
पाप और पुण्य के मध्य
जीवन बेवजह थरथराता है
सब एक दूसरे की अनुकृति या प्रतिकृति हैं
हाशिये के दोनों ओर
घुटने पर झुके लोग हैं
करना तो चाह रहे हैं प्रार्थना
पर केवल मिमिया भर रहे हैं
इस दोरंगी दुनिया में
शेर और बकरी के बीच
रक्तरंजित उदासी है

## आओ जुबान चलायें

मेरी देह पर हर उस जगह रिसते हुए घाव हैं

जहाँ मेरी थूक से लिथड़ी हुई
जुबान को पहुंचना नहीं आता

जीभ पर तैरते हैं हजारों हजार या
मिलियन ट्रिलियन विषाणु
घाव को चाटने में बहुत जोखिम है, भाई

आओ दर्द से मुंह मोड़कर
पूरी बेशर्मी के साथ जुबान चलायें.

इतिहास तटस्थ रहने वालों का जब गुनाह लिखेगा
यकीन करो, तब उसके फुटनोट्स में
बड़बोलों की जयकार जरूर दर्ज रहेगी

## बोलना बड़ी बात है

हर जरूरी सवाल को घसीट कर

कविता के अंधकूप में उतर जाना
उससे भी अधिक आवश्यक है
जैसे आदमखोर घसीट ले जाते हैं
तड़पते हुए शिकार का गला दबाकर
किसी झाड़ी या दीवार या फिर
मंच के पीछे बने ग्रीन रूम में.

घाव चाटने से दुरुस्त नहीं होते
उनकी बड़े जतन से तुरपाई करनी पड़ती है
किसी रफूगर की चतुराई से
पूरना पड़ता है
रेशा रेशा कर हर किस्म की क्षुद्रता को
खून की सामन्ती शिनाख्त होने तक
किसी टीस का कोई मतलब नहीं होता.

जिनकी जुबान लम्बी है ,लचीली है
सधी हुई है ,पलट जाने में निष्णात है
कृत्रिम आग में तपाकर पैनाई हुई है
यह कविता उनके लिए नहीं है ,भाई
जाओ जाओ ,अपना काम करो
छोटे बच्चे ताली और
बड़े लोग मजे से बगले बजाएं ❖